गरीब आलू और उसकी बड़ी जीत

Arif Khan

एक छोटे से सुंदर गाँव के किनारे आलू नाम के एक गरीब लेकि बेहद मेहनती सब्जी वाले की एक पुरानी सी दुकान थी। आलू रोज़ सुब सूरज उगने से पहले उठता, अपनी दुकान को साफ़-सुथरा करता और मुस्कुराहट के साथ ग्राहकों का इंतज़ार करता। हालाँकि उसकी दुकान ज़्यादा सब्जियाँ नहीं होती थीं, फिर भी वह पूरी निष्ठा से अपना काम करता था।

एक दिन आलू उदास बैठकर अपनी कम कमाई के बारे में सोच रहा था, तभी गाँव की सबसे बड़ी सब्जी दुकान की मालकिन घमंडी भिं वहाँ आई। भिंडी ने आलू की छोटी दुकान का मज़ाक उड़ाते हुए कहा ि वह कभी बड़ा दुकानदार नहीं बन सकता। आलू ने बिना गुस्सा हुए शां से सोचा कि गरीबी हमेशा नहीं रहेगी और वह अपनी मेहनत जारी रखेगा।

गांव की भीषण गर्मी को देखकर आलू ने एक नया और अनोख काम शुरू करने का फैसला किया। उसने अपनी छोटी सी बचत का इस्तेमाल करके ताज़े फलों का रस बेचने के लिए एक रंग-बिरंगा छोट सा जूस का ठेला तैयार किया। आलू को पूरा यकीन था कि उसकी मेहनत रंग लाएगी।

शुरुआती दो दिनों तक ठेले पर कोई ग्राहक नहीं आया, लेकिन तीसरे दिन एक छोटा बच्चा वहाँ जूस पीने आया। आलू ने मात्र दस रुप में उसे ताज़ा जूस दिया, जिसे पीकर बच्चा खुशी से झूम उठा और उस तुरंत अपने दोस्तों को भी वहाँ बुला लिया।

धीरे-धीरे आलू के जूस के ठेले पर पूरे गाँव के ग्राहकों की भारी भीड़ जुटने लगी। हर कोई उसके स्वादिष्ट और ताज़े जूस की तारीफ क रहा था। कुछ ही दिनों में आलू की रोज़ की कमाई बढ़ने लगी और उस चेहरा खुशी से खिल उठा।

आलू की सफलता देखकर जलन के मारे भिंडी ने भी जूस बेचन
शुरू कर दिया। लेकिन लालच में आकर उसने सस्ते और घटिया सामा
का इस्तेमाल किया, जिससे जूस का स्वाद ख़राब हो गया और ग्राहकों
उसकी दुकान पर जाना बंद कर दिया।

दूसरी ओर, आलू रोज़ अपने ठेले पर साफ़-सफ़ाई का विशेष ध्यान रखता था और हमेशा ताज़े फलों का ही इस्तेमाल करता था। व हर ग्राहक से प्यार और सम्मान से बात करता था, जिससे उसकी दुका की ख्याति दूर-दूर तक फैलने लगी।

कड़ी मेहनत और बचत के बल पर कुछ महीनों बाद आलू ने गाँ
के बीचों-बीच एक बहुत बड़ी और सुंदर दुकान खोल ली। अब उसकी
दुकान गाँव की सबसे प्रसिद्ध और पसंदीदा दुकान बन चुकी थी।

एक दिन भिंडी उदास होकर आलू के पास आई और अपनी पुरान
ग़लतियों के लिए माफ़ी माँगने लगी। आलू ने मुस्कुराकर उसे माफ़ क
दिया और समझाया कि अगर वह मेहनत और ईमानदारी से काम करेग
तो वह भी जीवन में ज़रूर सफल हो सकती है।

कुछ सालों बाद, आलू और भिंडी ने मिलकर गाँव में एक बहुत ब
फ़ूड सेंटर खोल दिया, जहाँ गाँव के कई लोगों को रोज़गार मिला। आ
ने यह साबित कर दिखाया कि गरीबी इंसान की शुरुआत हो सकती है
लेकिन उसकी मंज़िल नहीं।